अथवा

यही तो समाज का आदर्श है। स्त्री और पुरुष का सम्मिलित जीवन, सुख-दुःख दोनों का... न तो कोई शंका, न संदेह और न तलाक। किसी भी परिस्थिति में समझौता और सामंजस्य। इस प्रकार समाज की स्थिति दृढ़ है।

★★★

2016

HINDI

(Modern Indian Language)

(Hindi Natyasahitya)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) 'सड़क' के एकांकीकार कौन हैं?

(ख) एकांकी के किसी एक तत्त्व का उल्लेख कीजिए।

(ग) 'पाँच पर्दे' के सम्पादक कौन हैं?

(घ) 'सिन्दूर की होली' किस प्रकार का नाटक है?

(ङ) जीनत कौन है?

(च) 'जोंक' एकांकी समाज के किस वर्ग की कथा पर आधारित है?

(छ) 'बंदी' एकांकी में कितने दृश्य हैं?

(ज) आनंद किस एकांकी का पात्र है?

(झ) मुरारीलाल कौन-सी नौकरी करता है?

(ञ) 'सिन्दूर की होली' नाटक का नायक कौन है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए : 2×5=10

(क) "और वह तुम्हारा भी गुरु निकला! मैंने कहा था न कि अव्वल दर्जे का पाजी है?" यहाँ कौन किसे पाजी कह रहा है?

(ख) आलमगीर क्यों बेहोशी में रहना चाहता था?

(ग) आपकी दृष्टि में 'बंदी' एकांकी का प्रमुख पात्र कौन है और क्यों?

(घ) सड़क के प्रतीक से लेखक किस सत्य की ओर संकेत करना चाहता है?

(ङ) माहिर, मनोजशंकर को उसके पिता की मृत्यु का कारण क्यों बता देता है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) एकांकी-कला के आधार पर 'जोंक' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

(ख) 'औरंगज़ेब की आखिरी रात' की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।

(ग) नामकरण की दृष्टि से 'सड़क' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

(घ) हेमलता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ङ) भगवतीशरण वर्मा की साहित्यिक देन पर विचार कीजिए।

(च) एकांकीकार के रूप में उदयशंकर भट्ट का परिचय दीजिए।

4. "'औरंगज़ेब की आखिरी रात' हिन्दी के उन ऐतिहासिक एकांकियों में से है जो इतिहास में मानवीय पक्ष को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।" इस उक्ति की सार्थकता प्रतिपादित कीजिए। 10

अथवा

'बंदी' एकांकी में बंदी कौन हैं? एकांकीकार ने किस दृष्टि से उन्हें बंदी कहा है?

5. 'सिन्दूर की होली' नाटक की नायिका कौन है? सतर्क उत्तर दीजिए। 10

अथवा

मनोजशंकर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) कुछ नहीं, बस ढोर के स्थान पर सड़क कर लीजिए—'सड़क गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी।' स्त्री की तरह सड़क भी पीटने पर ही ठीक रहती है।

अथवा

हम जिन्दगी में अपने साथ कुछ नहीं लाए, लेकिन अपने साथ गुनाहों का कारवाँ लिए जा रहे हैं।

(ख) हम लोग मनुष्य और उसके अधिकार की रक्षा के लिए कुर्सी पर नहीं बैठते... हम लोगों का तो काम है केवल कानून की रक्षा करना।